IJAREEIE

e-ISSN: 2278-8875
p-ISSN: 2320-3765

International Journal of Advanced Research in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

Volume 13, Issue 1, January 2024

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.317

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधीजी का योगदान

Devendar Kumar

M.A, Department of History, NET, Bhalikhal (Dhorimana), Barmer, Rajasthan, India

सार: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी का योगदान अतुलनीय था। अहिंसा और सविनय अवज्ञा के उनके दर्शन तथा असहयोग एवं सविनय अवज्ञा की उनकी रणनीति और उनके नेतृत्त्व ने भारतीय जनता को एकजुट करने के साथ ब्रिटिशों को भारतीयों की मांगों को मानने के लिये मजबूर किया था।

I. परिचय

19वीं सदी के अंत में देश में राष्ट्रवाद की भावना प्रबल हुई। इसका मुख्य कारण शिक्षा का प्रसार, रेल यातायात में वृद्धि, समाचार-पत्रों और प्रेस का प्रसार, पश्चिमी देशों की संस्कृति और साहित्य का ज्ञान, आर्थिक परिस्थितियों तथा प्रारंभिक उदारवादी नेताओं द्वारा राजनीतिक जागरूकता के लिए की गई गतिविधियों ने राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खेलें।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उदारवादी व उग्रवादी नेताओं ने जनसामान्य में राजनीतिक चेतना का प्रसार किया, साथ ही कांग्रेस के उभरते हुए धांधलियों को अखिल भारतीय स्तर पर मजबूत किया।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ संघर्ष के रूप में बंग-भंग आंदोलन में स्वदेशी और बहिष्कार जैसी गतिविधियों का प्रयोग करते हुए गांधी जी ने 'सविनय अवज्ञा' और 'असहयोग आंदोलन' में प्रयोग किया।

पूर्व के प्रवाह में प्राप्त जन-सहयोग को गांधी जी ने संघर्ष के विरुद्ध अंग्रेजी सरकार में प्रयोग किया। इन गतिविधियों में छात्रों, किसानों और महिलाओं ने सक्रिय योगदान दिया।

ब्रिटिश सरकार की दमनकारी और शोषणकारी नीतियों से उत्पन्न जनपक्षधर ने गांधी जी को अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष के लिए प्रेरित किया।[1,2,3]

ब्रिटिश सरकार के रौलेट एक्ट और जलियाँवालाबाग हत्याकांड के कारण गांधी जी को आंदोलन के लिए जनसहयोग प्राप्त हुआ।
ब्रिटिश शासन में किसानों पर अत्यधिक लगान आश्रितों और किसान विरोधी विचारधाराओं के कारण अनेक किसान आंदोलन हुए, यह आंदोलन भी स्वतंत्रता संघर्ष के साथ-साथ हुआ।

समाजवादी और साम्यवादी विद्रोह के उदय के कारण आमजन में आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के प्रति जनजागरूकता उत्पन्न हुई। इस जनजागरूकता का प्रयोग गांधी जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में किया था।

द्वितीय विश्व युद्ध ने विश्व में उपनिवेश देशों की कमज़ोरियों को उजागर किया।
आजाद हिंद फौज का गठन, नाविक विद्रोह ने जनसामान्य में स्वतंत्रता की आकांक्षा को प्रबल किया।
ब्रिटेन में आम चुनाव होने के कारण वहां की कंजरवेटिव पार्टी की सरकार चुनाव से पहले भारत जैसे बड़े उपनिवेश का कोई संवैधानिक हल निकालना चाहती थी।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान अनेक ऐसी परिस्थितियां रहीं, जिन्होंने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में सकारात्मक भूमिका निभाई। लेकिन इसके साथ ही गांधी जी के सत्य, अहिंसा और असाहयोग जैसे पहलुओं के साथ ही उनके कुशल नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

II. विचार-विमर्श

हम में से बहुत से लोग महात्मा गांधी के प्रेरणास्रोत से परिचित हैं। आइए हम उनमें से अधिकांश की जांच करें:
चंपारण सत्याग्रह (1917)
बिहार के चंपारण चरण में, तिनकठिया गीत के तहत नील की खेती करने वालों की व्यवस्था दुखद हो गई थी। इसके निर्माण के तहत, किसानों को अपनी संस्कृति के अनुसार 3/20वें हिस्से से अधिक नील की खेती करनी पड़ी और फिर उसे बहुत कम कीमत पर

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

बेचना पड़ा। खराब मौसम और भारी करों के कारण किसानों के बाहर चले जाने की स्थिति और भी दयनीय हो गई। फिर, राजकुमार शुक्ल ने लखनऊ में महात्मा गांधी से मुलाकात की और उनका स्वागत किया।

चंपारण में, महात्मा गांधी ने आम गैर-अनुपालन विकास की प्रतिबद्धता अपनाई या ज़मीन मालिकों के खिलाफ प्रदर्शन या हड़तालें की। इसलिए, आम लोगों की सर्वोच्चता चंपारण कृषि सलाहकार समूह पर निर्भर थी, जिसके गांधी जी भी एक सदस्य थे। पत्रकारों के बारे में कुछ माँगें बताई गई हैं, लेकिन सत्याग्रह प्रभावी हुआ करता था।

सत्याग्रह (1918)
गुजरात में 20वीं सदी की शुरुआत में सूखे की वजह से फसलें बुरी तरह से हो गई थीं। मोहन लाल पांडे ने 1917 में कर-मुक्त अभियान का नेतृत्व [4,5,6]किया और खराब फसल के दौरान भी गरीब किसानों द्वारा दिए जाने वाले करों में छूट की मांग की। इस अभियान में गांधीजी भी शामिल हो गए और उन्हें सत्याग्रह शुरू करने के लिए प्रेरित किया। इंदुलाल याग्निक और वल्लभभाई पटेल जैसे कुछ महान नेता सत्याग्रह में शामिल हुए थे।

अहमदाबाद मिल डो
1918 में, गांधीजी ने उद्योगपतियों के खिलाफ भूख हड़ताल और सत्याग्रह का इस्तेमाल किया और इस क्षेत्र में भारी बारिश हुई जिससे फसलें बर्बाद हो गईं और प्लेग भी फैल गया। अकाल और प्लेग के दौरान, महंगाई को बोनस दिया जाने लगा, लेकिन महामारी के बाद इसे बंद कर दिया गया। इसका नतीजा यह हुआ कि श्रमिक उनके खिलाफ हो गए और 50% महंगाई भत्ते की मांग करने लगे। गांधीजी ने भूख हड़ताल की और अहमदाबाद मिल हड़ताल के दौरान, स्वामी को 35% वेतन वृद्धि दी थी।

सत्याग्रह आंदोलन (1917-1918)
वर्ष 1918 में उनकी सबसे बड़ी विचारधारा से एक चंपारण और व्यापक विद्रोह हुआ, जिसे ब्रिटिश धार्मिक आदर्शों के विरुद्ध सुधार के रूप में भी जाना जाता है। किसानों के पास अभी भी कम आय थी, लेकिन उन्हें नील की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा था या उन्हें निश्चित मानदंडों पर बढ़ावा देने के लिए बहुत अधिक नियंत्रण था। अंत में, महात्मा गांधी के अनुसार इन किसानों में शांत असंतोष व्याप्त था। जिसमें गांधीजी ने युद्ध लड़ा था। वर्ष 1918 के बीच बाढ़ की मार झेलनी पड़ी थी और किसानों को मदद करने की भी जरूरत थी। गांधीजी का मुख्य साधन गैर-भागीदारी था, जो करो की गैर-मौजूदगी के लिए किसानों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए था।

खिलाफत आंदोलन (1919-1924)
खिलाफ आंदोलन की शुरुआत अली भाइयों ने तुर्की के साथ मिलकर की थी, जो अन्याय के खिलाफ संघर्ष के बाद हुई थी। गांधीजी ने 1919 में मुसलमानों के खिलाफ आवाज उठाई, उन्होंने पाया कि कांग्रेस का क्षेत्र बहुत ही निराशाजनक और मनमौजी था। मुसलमानों के खिलाफ आंदोलन खलीफा के साथ स्थिति के खिलाफ आम दुश्मनी से जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में, तुर्की में खलीफा की गलत प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित करने के बाद ब्रिटिश शासन के खिलाफ आंदोलन को दूर-दूर तक फैलाया गया। अखिल भारतीय सम्मेलन दिल्ली से रवाना हुआ, जहां महात्मा गांधी को एक बार अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के बीच ब्रिटिश साम्राज्य से उपकरण को वापस ले लिया। खिलाफत आंदोलन के परिणामस्वरूप उन लोगों का नेता बना दिया गया। अंततः महात्मा गांधी ने एक अखिल भारतीय मुस्लिम सम्मेलन आयोजित किया और इस अवसर के लिए अनिवार्य अकेले के बीच बन गए। इस आंदोलन ने मुसलमानों का आम तौर पर समर्थन किया और इसके परिणामस्वरूप उन्हें आम आदमी बना दिया गया और कांग्रेस पार्टी के बीच सत्ता के प्रमुख क्षेत्रों सहित काम किया गया। 1922 में खिलाफत आन्दोलन में भारी गिरावट आई लेकिन अपनी यात्रा के माध्यम से गांधीजी ने सांप्रदायिकता के खिलाफ लड़ाई लड़ी, वहीं दूसरी ओर सांप्रदायिक और मुसलमानों के बीच की खाई और चौड़ी हो गई।

असहयोग आंदोलन (1920)
जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आंदोलन की शुरुआत की थी। महात्मा गांधी का मानना था कि यह आंदोलन आगे बढ़ेगा लेकिन अंग्रेज भारतीयों के ऊपर अपनी साजिश में शामिल होंगे। कांग्रेस की मदद से गांधी जी ने लोगों को शांत तरीके से असहयोग आंदोलन शुरू करने के लिए राजी किया, जो आजादी [7,8,9]हासिल करने के लिए जरूरी है। उन्होंने स्वराज की अवधारणा को रेखांकित किया लेकिन यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक जरूरी चीज बन गई। यह आंदोलन तेजी से आगे बढ़ा या लोगों ने ब्रिटिश सरकार के खिलाफ वस्तुओं और संस्थाओं का बहिष्कार करना शुरू कर दिया, जैसे कि स्कूल, कॉलेज और सरकारी दफ्तर। उम्मीद के मुताबिक, चौरी चौरा की घटना पर महात्मा गांधी ने आंदोलन को अंजाम दिया था। उस घटना में 23 पुलिसकर्मी और अधिकारी मारे गए थे।

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)
गांधी द्वारा संचालित प्रवृत्तियों पर आगे बढ़ने वाला आंदोलन असहयोग आंदोलन था, जो सितंबर 1920 से फरवरी 1922 तक चला। इस विकास में गांधी एक समय पर एक पसंदीदा व्यक्ति थे, इसलिए ब्रिटिश इस तथ्य के मद्देनजर नियंत्रण बनाए रखने में बहुत अच्छे थे कि भारतीय सहायक रहे हैं। यदि किसी राज्य के निवासी अंग्रेजों की देखरेख में मदद करना छोड़ देते हैं, तो निराश अंग्रेजों को आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इस सुधार ने कुख्याति प्राप्त की, या जल्दी ही महत्वपूर्ण हो गया कि बहुत से लोग ब्रिटिश द्वारा संचालित और फिर सहायक संस्थाओं का बहिष्कार कर रहे थे। इसका मतलब यह था कि लोगों ने कहीं और नौकरी देखी और अपने बच्चों को स्कूलों से निकाल दिया, फिर सरकारी कार्यालयों से दूर रहने लगे। प्रसिद्ध महात्मा गांधी प्रसिद्ध हो गए।

महात्मा गांधी ने मार्च 1930 में यंग इंडिया नामक एक पत्र में अमेरिका को संबोधित किया या इस खतरे के बारे में सुधार लाने की अपनी क्षमता का संचार किया कि उनके ग्यारह अनुरोधों को जनता के अधिकारियों द्वारा संदर्भित किया गया। किसी के मामले में, तब से जनता का शासन लॉर्ड इरविन के पास था, फिर भी उसने उसके अनुसार जवाब नहीं दिया। तदनुसार, महात्मा गांधी ने पूरी शक्ति के साथ विकास शुरू किया। उन्होंने 12 मार्च से 6 अप्रैल, 1930 तक दांडी मार्च के साथ विकास शुरू किया। महात्मा गांधी अपने अनुयायियों के साथ, अहमदाबाद के नवसारी जिले के बीच दांडी के अनुसार साबरमती आश्रम के पास समुद्र तट पर चले और 6 अप्रैल, 1930 को नमक बनाकर पाउडर हुक्म का उल्लंघन किया।

इसके विकास के तहत, छात्रों ने कॉलेज छोड़ दिया या शासन कर्मचारियों ने अपने कार्यस्थल छोड़ दिए। विदेशी कपड़ों के बारे में ब्लैकलिस्ट; रम्मी कपड़ों पर आम शराब पीना; नियमित शुल्क का भुगतान न करना; कॉमन्स डोमिनियन शराब की दुकान पर महिलाओं द्वारा धरना आयोजित करना; या और भी बहुत कुछ। 1930 में, लॉर्ड इरविन की सरकार ने लंदन में एक गोलमेज सम्मेलन की मांग की, तब भारतीय राष्ट्रीय सम्मेलन इसमें भाग नहीं लेगा। इस प्रकार, कांग्रेस को सभाओं में भाग लेने के लिए मजबूर करने के बाद, उन्होंने 1931 में महात्मा गांधी के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। इसे गांधी-इरविन समझौते के रूप में जाना जाता था। यह प्रत्येक राजनीतिक बंदी की रिहाई या कठोर कानूनों को खत्म करने पर केंद्रित है।

भारत छोड़ो आंदोलन
महात्मा गांधी ने 8 अगस्त, 1942 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत छोड़ो आंदोलन से बहुत दूर प्रस्थान किया, जो भारत के बारे में विदेशी ब्रिटिश सरकार के दबाव के अनुरूप था। आंदोलन में, महात्मा गांधी ने "डूबने के बाद तैरना" भाषण दिया। इसलिए, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की पूरी बैठक ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा जब्त कर ली गई या प्रारंभिक रूप से हिरासत में ले ली गई। हालाँकि, असंतोष संयुक्त राज्य अमेरिका तक फैल गया। द्वितीय विश्व युद्ध के अंत में, ब्रिटिश शासन ने भारत के साथ सत्ता को आत्मसमर्पण करने से मना कर दिया। महात्मा गांधी ने आंदोलन को रद्द कर दिया, जिससे सैकड़ों बंदियों की उपस्थिति का सम्मान हुआ।

इस प्रकार, ये महात्मा गांधी द्वारा आगे बढ़ाए गए सामान्य गुण हैं जिन्होंने ब्रिटिश शासन और सीमांत शासन के बीच अंतर स्थापित करके भारत की मदद की।

III. परिणाम

गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आज "भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में महात्मा गांधी का प्रभाव" विषय पर तीसरे ई क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया. समिति द्वारा यह कार्यक्रम जमशेदपुर महिला कॉलेज जमशेदपुर के सहयोग से आयोजित किया गया. सम्मेलन में विश्व भारती शांति निकेतन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिद्युत चक्रवर्ती मुख्या[10,11,12] अतिथि थे.

इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए प्रो चक्रवर्ती ने कहा कि वकील मोहनदास की महात्मा गांधी बनने की यात्रा को समझने के लिए हमें इतिहास में देखना होगा. पहले दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह, फिर चम्पारण आंदोलन से लेकर आजादी के संघर्ष में उनकी हिस्सेदारी. इस तरह एक संघर्षशील प्रक्रिया से गुजरकर वे महात्मा गांधी बने. आजादी की लडाई में उनका योगदान अविस्मरणीय है.आज़ादी के आन्दोलन में महात्मा गांधी का विशेष योगदान था.

विकास भारती बिशनपुर के संस्थापक सचिव पद्मश्री अशोक भगत ने कहा कि गांधी जी भारत की सनातन परंपरा को साथ लेकर चले. अपने गुरु गोखले की सलाह पर उन्होंने भारत का भ्रमण कर भारत को जाना. उनकी अहिंसा की अवधारणा भारत की 'अहिंसा परमो धर्म:' की पुरातन परंपरा से प्रेरित है. समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि गांधी जी के आंदोलन अहिंसा के प्रतीक है. वे अहिंसा को लेकर बहुत सजग थे. यही कारण है कि जब चौरी-चौरा में हिंसा हुई, तो उन्होंने तुरंत अपना आंदोलन वापस ले लिया. उनकी अहिंसा की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है. सम्मेलन में जमशेदपुर महिला कॉलेज की प्राचार्य डॉ. शुक्ला मोहंती ने कहा कि आजादी की वर्षगांठ मनाना तभी सार्थक होगा, जब हम स्त्री की स्वतंत्रता सुनिश्चित करेंगे.

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

1. प्रथम विश्व युद्ध

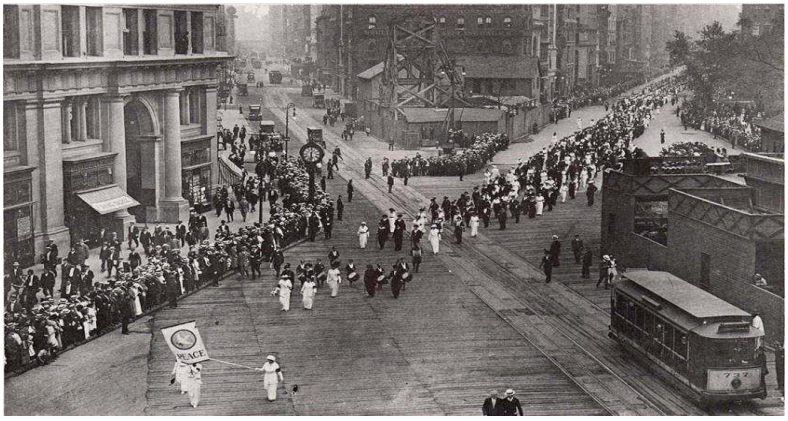

भारत के तत्कालीन वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने गांधी को एक युद्ध सम्मेलन में दिल्ली आमंत्रित किया। ब्रिटिश साम्राज्य का विश्वास हासिल करने के लिए गांधी प्रथम विश्व युद्ध के लिए सेना में लोगों को भर्ती होने के लिए वह सूची में शामिल करने के लिए सहमत हुए। हालांकि उन्होंने वायसराय को लिखा और कहा कि वह "किसी को भी ना तो मारेंगे ना ही घायल करेंगे फिर चाहे वो दोस्त हो या दुश्मन।"

2. चंपारण

बिहार में चंपारण आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता राजनीति में गांधी की पहली सक्रिय भागीदारी थी। चंपारण के किसानों को इंडिगो उगाने के लिए मजबूर किया जा रहा था और विरोध करने पर उन्हें प्रताड़ित किया जा रहा था। किसानों ने गांधी की मदद मांगी और एक अहिंसक विरोध के माध्यम से गांधी अंग्रेजों से रियायतें जीतने में कामयाब रहे।

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

3. खेड़ा

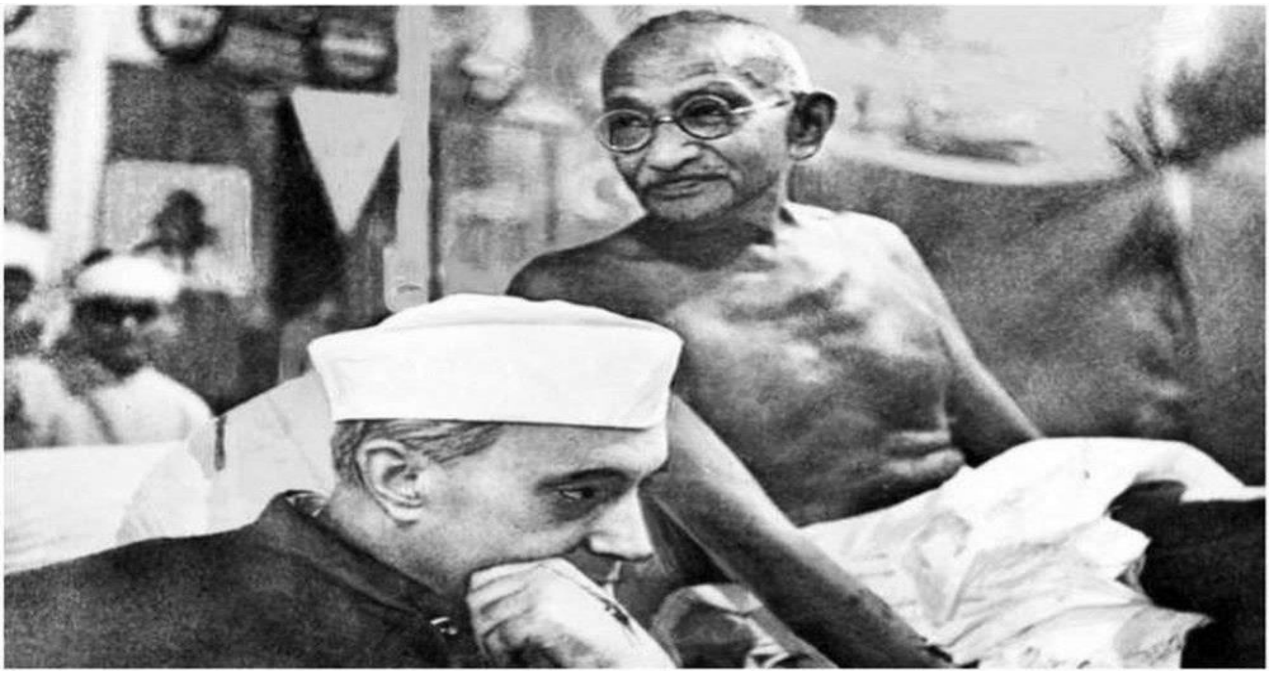

जब गुजरात का एक गाँव खेड़ा बुरी तरह बाढ़ की चपेट में आ गया, तो स्थानीय किसानों ने शासकों से कर माफ करने की अपील की। यहां गांधी ने एक हस्ताक्षर अभियान शुरू किया जहां किसानों ने करों का भुगतान न करने का संकल्प लिया।[13,14,15] उन्होंने ममलतदारों और तलतदारों (राजस्व अधिकारियों) के सामाजिक बहिष्कार की भी व्यवस्था की। 1918 में सरकार ने अकाल समाप्त होने तक राजस्व कर के भुगतान की शर्तों में ढील दी।

4. खिलाफत आंदोलन

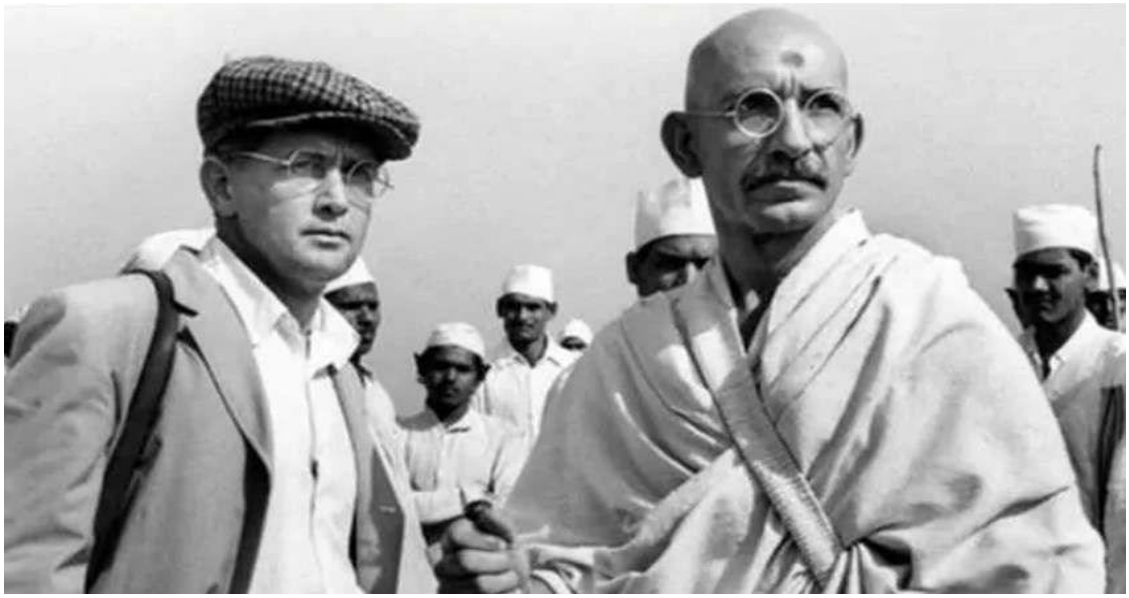

मुस्लिम आबादी पर गांधी का प्रभाव उल्लेखनीय था। यह खिलाफत आंदोलन में उनकी भागीदारी से स्पष्ट था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद मुसलमानों ने अपने खलीफा या धार्मिक नेता की सुरक्षा के लिए आशंका जताई और खलीफा के पतन की स्थिति के खिलाफ लड़ने के लिए दुनिया भर में विरोध प्रदर्शन किया जा रहा था।

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

गांधी अखिल भारतीय मुस्लिम सम्मेलन के एक प्रमुख प्रवक्ता बन गए और दक्षिण अफ्रीका में अपने भारतीय एम्बुलेंस कॉर्प्स दिनों के दौरान अंग्रेजों से मिले पदक लौटा दिए। खिलाफत में उनकी भूमिका ने उन्हें कुछ ही समय में राष्ट्रीय नेता बना दिया।

5. असहयोग आंदोलन

गांधी ने महसूस किया था कि भारतीयों से मिले सहयोग के कारण ही अंग्रेज भारत में आ सके थे। इसे ध्यान में रखते हुए उन्होंने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया। कांग्रेस के समर्थन और उनकी अदम्य भावना के साथ उन्होंने लोगों को आश्वस्त किया कि शांतिपूर्ण असहयोग स्वतंत्रता की कुंजी है। जलियांवाला बाग नरसंहार के अशुभ दिन ने असहयोग आंदोलन को गति दी। गांधी ने स्वराज या स्वशासन के लक्ष्य को निर्धारित किया जो तब से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का आदर्श बन गया।

6. दांडी आंदोलन

इसे नमक मार्च (march for salt by mahatma gandhi) के रूप में भी जाना जाता है। गांधी की नमक यात्रा को स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। 1928 की कलकत्ता कांग्रेस में गांधी ने घोषणा की कि अंग्रेजों को भारत को प्रभुत्व[16,17] का दर्जा देना चाहिए या देश पूरी आजादी के लिए क्रांति में बदल जाएगा। अंग्रेजों ने इस पर ध्यान नहीं दिया।

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

परिणामस्वरूप 31 दिसंबर 1929 को लाहौर में भारतीय ध्वज को फहराया गया और अगले 26 जनवरी को भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया। फिर गांधी ने मार्च 1930 में नमक कर के खिलाफ सत्याग्रह अभियान शुरू किया। उन्होंने नमक बनाने के लिए गुजरात के अहमदाबाद से दांडी तक 388 किलोमीटर की दूरी तय की। हजारों लोग उनके साथ शामिल हुए और इसे भारतीय इतिहास के सबसे बड़े मार्च (protest by mahatma gandhi) में से एक बना दिया।

7. भारत छोड़ो आंदोलन[18,19]

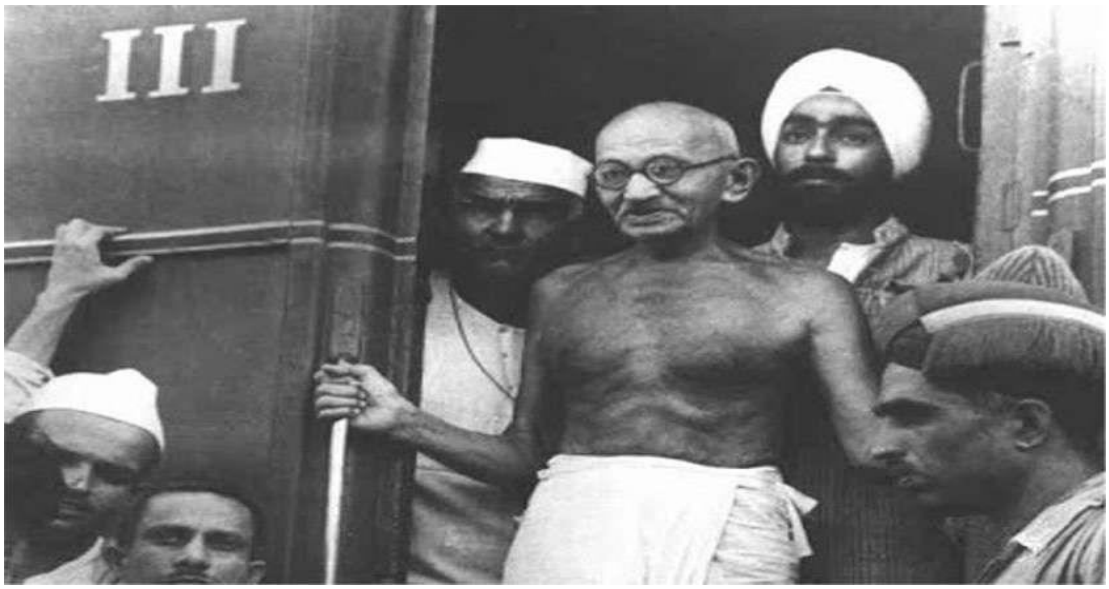

IV. निष्कर्ष

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान गांधी ने ब्रिटिश साम्राज्य पर सुनिश्चित ढंग से प्रहार करने की ठानी, जिससे भारत से अंग्रेजों का बाहर निकलना सुरक्षित बन जाए। यह तब हुआ जब अंग्रेजों ने भारतीयों को युद्ध के लिए भर्ती करना शुरू किया।

गांधी ने कड़ा विरोध किया और कहा कि भारतीय एक ऐसे युद्ध में शामिल नहीं हो सकते हैं, जो लोकतांत्रिक उद्देश्यों के पक्ष में लड़ी जा रही हो, जबकि भारत स्वयं एक आजाद देश नहीं है। इस तर्क ने उपनिवेशवादियों की दो-मुंह वाली छवि को उजागर किया और आधे दशक के भीतर वे इस देश से बाहर हो गए।[20,21]

संदर्भ

1. "Ramachandra Guha is wrong. Gandhi went from a racist young man to a racist middle-aged man". मूल से 25 दिसंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 24 दिसंबर 2018.
2. ↑ आर० गाला, पापुलर कम्बाइन्ड डिक्शनरी, अंग्रेजी-अंग्रेजी-गुजराती एवं गुजराती-गुजराती-अंग्रेजी, नवनीत
3. ↑ भार्गव की मानक व्याख्या वाली हिन्दी-अंग्रेजी डिक्शनरी
4. ↑ Webdunia. "gandhi jayanti 2020: महात्मा गांधी का जीवन परिचय". hindi.webdunia.com. अभिगमन तिथि 2021-10-02.
5. ↑ "Mahatma Gandhi : वकील से राष्ट्रपिता बनने तक का सफर, ये है कहानी". Patrika News (hindi में). अभिगमन तिथि 2021-10-02.
6. ↑ गांधी नामक दस्तावेज से अवतरित महात्मा गांधी की संग्रहित कृतियां वॉल्यूम ५ दस्तावेज # दैवत्य के मुखैटे के पीछे पेज १०६
7. ↑ http://www.gandhism.net/sergeantmajorgandhi.phpसार्जेंट[मेजर गांधी
8. ↑ महात्मा गांधी की संग्रहित रचनाएं वॉल्यूम ५ पेज ४१०
9. ↑ "How Gandhi shed his racist robe". www.telegraphindia.com. मूल से 22 दिसंबर 2018 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 22 दिसंबर 2018.
10. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.८२ .
11. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.८९ .

| e-ISSN: 2278 – 8875, p-ISSN: 2320 – 3765| www.ijareeie.com | Impact Factor: 8.317|| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 13, Issue 1, January 2024||

|DOI:10.15662/IJAREEIE.2024.1301011 |

12. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.१०५ .
13. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.१३१ .
14. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.१७२ .
15. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पीपी .२३० -३२ .
16. ↑ हरिभाउ उपाध्याय ने बापू कथा के नाम से उनके अपशेष जीवन काल १९२० से १९४८ तक की घटनाओं का संकलन किया है जिसे सर्व सेवा सन्ध वाराणसी द्वारा गांधी संवत्सरी वर्ष १९६९ ई में प्रकाशित किया हैं।
17. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.२४६ .
18. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पीपी .२७७ - ८१ .
19. ↑ आर०गांधी, पटेल : एक जीवन, पीपी२८३-८६
20. ↑ आर० गांधी, पटेल : एक जीवन, पी.३०९
21. ↑ आरगांधी, पटेल : एक जीवन, पी.३१८ .

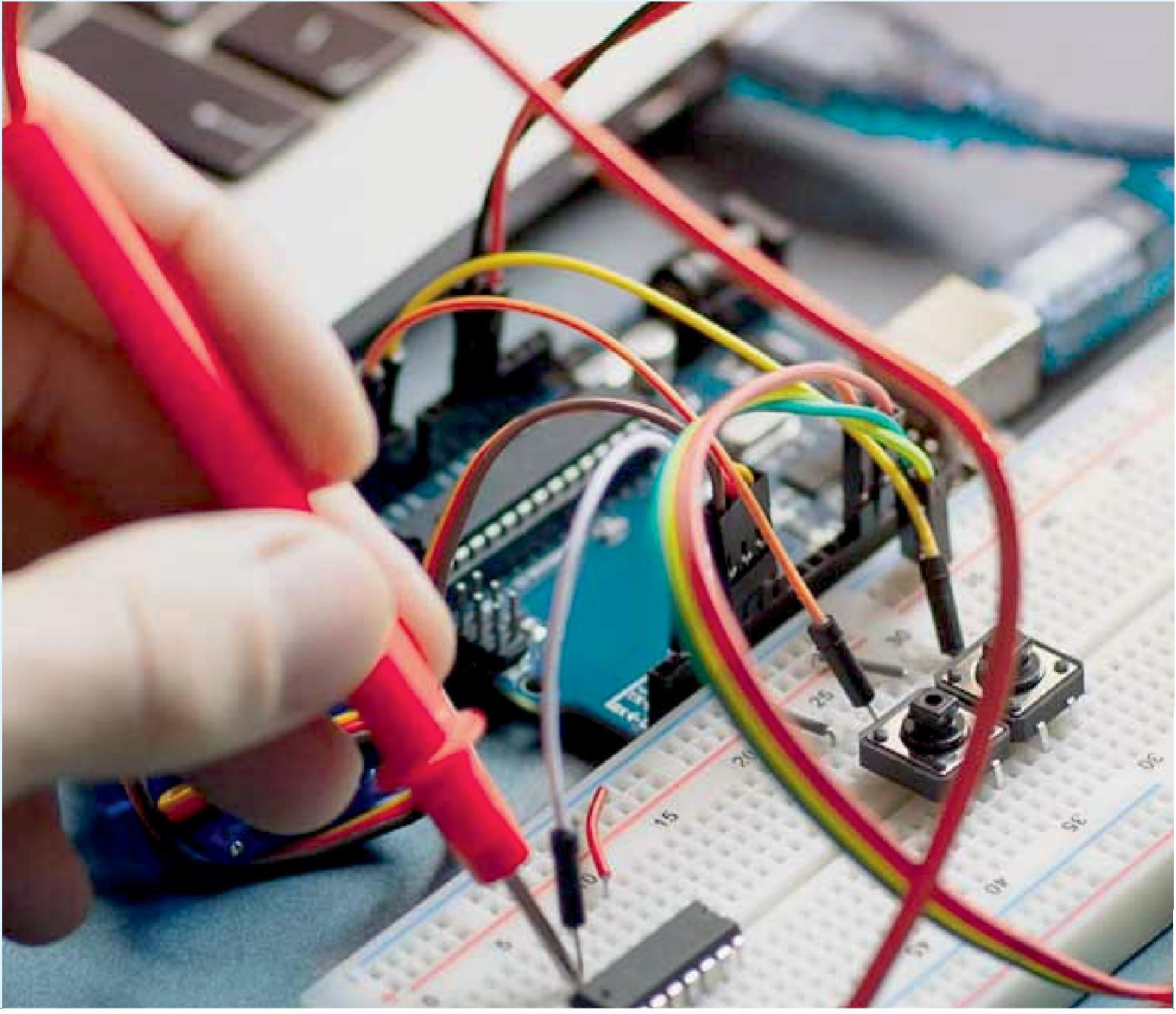

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

Impact Factor: 8.317

International Journal of Advanced Research

in Electrical, Electronics and Instrumentation Engineering

9940 572 462 6381 907 438 ijareeie@gmail.com

Scan to save the contact details